Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 04 April - 2024

DOIs:10.2018/SS/202404011 --:-- Research Paper / Article / Review

प्रेमचंद कृत गोदान में भारतीय कृषक

अनीता
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग
श्री कृष्णा राजकीय महाविद्यालय कँवाली (रेवाड़ी)
Email - anitamandola@gmail.com

शोध सार:- भारत प्राचीन समय से ही एक कृषि प्रधान देश रहा है। यहां की लगभग 70% आबादी गांव में निवास करती है। अज्ञेय जी के अनुसार यदि आपको वास्तविक भारत के दर्शन करने हैं तो आपके गांव का भ्रमण करना होगा। इन ग्रामीण लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। इनकी आजीविका का प्रमुख साधन कृषि है। हमारे देश की अर्थव्यवस्था में भी कृषि का एक बड़ा योगदान रहा है। एक कृषक के पूरे परिवार का पालन-पोषण कृषि पर ही आधारित होता है। समय-समय पर अनेक लेखकों द्वारा कृषक जीवन को अपने साहित्य में उकेरा गया है। इनमें से ही एक नाम महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद का भी है। प्रेमचंद जी जन सामान्य से जुड़े हुए लेखक रहे हैं। उनके द्वारा लिखा गया साहित्य वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है। कृषि एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें किसान जीवन भर कठोर मेहनत व परिश्रम करता है। प्रेमचंद जी का उपन्यास गोदान कृषक जीवन पर आधारित है। गोदान ग्रामीण जीवन और कृषि का एक महान गद्यात्मक कृति मानी जाती है। लेखक पहले आदर्शवाद पर लेखन करते थे लेकिन गोदान तक आते-आते उनकी लेखनी यथार्थवाद हो गई। उनके उपन्यास लेखन में दो विचार देखे जा सकते हैं सामाजिक यथार्थवाद एवं सामाजिक आदर्शवाद। इन्होंने अपने आरंभिक उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया। इनका आदर्शवाद अंतत हृदय परिवर्तन द्वारा प्रकट होता है। समाज में नारी का शोषण, बेमेल विवाह जाति-पाति का भेदभाव, छुआछूत की समस्या आदि को इन्होंने नैतिकतावादी दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया। विधवाओं और वेश्याओं के कल्याण के लिए इन्होंने आश्रम वादी व्यवस्था में विश्वास जताया। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी प्रेमचंद के बारे में लिखते हैं "प्रेमचंद शताब्दियों से पद दलित, अपमानित और उपेक्षित कृषकों की आवाज थे। अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार- विचार, भाषा-भाव, रहन-सहन,आशा-आकांक्षा, सुख-दुख और सूझ-बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।" अपने लेखन के अंतिम पड़ाव में प्रेमचंद जी के उपन्यास लेखन की परंपरा पूरी तरह बदल गई। उन्होंने आदर्शवाद समाधान के स्थान पर समस्या का हुबहु चित्रण प्रस्तुत किया। गोदान में सामाजिक यथार्थवाद का चित्रण किया गया है।

बीज शब्द:- पूंजीवाद, सामंतवाद, बिरादरी, अंधविश्वास, परंपरागत मूल्य।

1. प्रस्तावना:-

गोदान उपन्यास का नायक होरी है। वह सामान्य और विशिष्ट दोनों प्रकार के मूल्यों से युक्त है। उसका सामान्य रूप वहां दिखता है जहां घर में रूपए-पैसे के रहते हुए भी महाजनों के आगे झूठी कसमें खा लेता है, विवाह करवाने के झूठे आश्वासन पर भोले से उसकी गाय लेने की कोशिश करता है, बाँस की कटाई में अपने भाइयों से ₹5 की बेईमानी करता है, सन को गीला करने व रूई में बिनोले मिलाता हैं, गांव वालों के सामने अपनी ही पत्नी को पीटता है व अपनी छोटी बेटी रूपा की शादी पैसे लेकर एक अधेड़ उम्र के रामसेवक से करता है। लेकिन दूसरी और हम उसके उच्च नैतिक गुणों व मानवीय मूल्यों को भी देखते हैं जैसे संयुक्त पारिवारिक मर्यादा को निभाने में आगे रहता है, अपने ही भाई हीरा के द्वारा गाय को विष देने व घर छोड़कर भाग जाने पर वह उसकी गृहस्थी का भार उठता है, यहां तक की हीरा के घर की तलाशी रोकने के लिए दरोगा को रिश्वत देता हैं, स्त्री जाति का अपमान देखकर खान का वेश बदलकर मेहता को उठाकर पटक

देता हैं, झुनिया और शिलिया को अपने घर में शरण देता है, यह सब होरी के विशिष्ट मूल्यों को दर्शाते हैं। होरी की पत्नी का नाम धनिया है। धनिया सामाजिक ग्रामीण व्यवस्था में स्त्री चरित्र को प्रकट करने वाला पात्र है। प्रेमचंद जी ने इसे कटु यथार्थवादी चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया है। आर्थिक-सामाजिक परेशानी व गरीबी के कारण उसकी भाषा कड़वी हो गई है। धनिया विद्रोही प्रवृत्ति की स्त्री है। सिलिया को घर में शरण देने व झुनिया को बहू का दर्जा देने के लिए वह अपनी जान की भी परवाह नहीं करती।

धनिया होरी की तरह सामंती शोषण को चुपचाप सहन नहीं करती। रायसाहब के यहां होरी के जाने के समय वह कहती है जमींदार के खेत है तो वह अपना लगान ही तो लेगा भला हम उसकी खुशामद क्यों करेंगे, वही गाय की हीरा द्वारा हत्या करने पर और हीरा के घर की तलाशी रोकने के लिए होरी घर की मर्यादा को बचाने के लिए दरोगा को रिश्वत देने का प्रयास करता है तो धनिया भरी सभा में इसका विरोध करती है। धनिया दरोगा को भी कोसती हैं। धनिया सिर्फ खेतों में ही होरी के साथ काम नहीं करती बल्कि उसकी हर चिंता में उसके साथ खड़ी रहती है। गोदान के अन्य पात्रों में एक पात्र गोबर जो होरी का बेटा है। गोबर वर्ग चेतना का प्रतीक हैं। वह होरी की तरह आस्थावान पीढ़ी का न होकर विद्रोही पीढ़ी का किसान है। परिस्थितियों के आगे झुकने की जगह उन्हें वह अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करता है। वह शोषण कर्ताओं का विरोध करता है। रायसाहब की जमींदारी व्यवस्था व सामंती व्यवस्था को उद्घाटित करने वाला पात्र है। इसके अतिरिक्त मुख्य पात्रों में मिस्टर खन्ना, मिस्टर मेहता व मिस मालती आते हैं। इसके अतिरिक्त सोना, रूपा, झुनिया, शिलिया, दरोगा, भोला आदि गौण पात्र हैं।

गोदान में जातिगत भेदभाव,ऊँच-नीच,अमीर-गरीब. महाजन-देनदार का भेद दिखाया गया है और होरी इस भेदभाव का शिकार बनता है। इसका साक्षात शोषण कोई भी नहीं करता फिर भी वह बर्बाद हो जाता है। इसकी बर्बादी उसके शरीर में लगी हुई जोंकों के कारण होती है जिन्हें ना तो वह देख पाता और ना ही उनसे स्वतंत्र हो पाता है। यह स्थिति गांव में रहने वाले होरी की ही नहीं अपितु अधिकतर ग्रामीण की है। गांव की दयनीय दशा को इन पंक्तियों द्वारा देखा जा सकता है-"और यह दशा कुछ होरी ही की न थी। सारे गांव पर यह विपत्ति थी। ऐसा एक आदमी भी नहीं, जिसकी रोनी सूरत न हो, मानो उनके प्राणों की जगह वेदना ही बैठी उन्हें कठपुतलियों की तरह नचा रही हो। चलते-फिरते थे, काम करते थे, पिसते थे, घुटते थे, इसलिए कि पिसना और घुटना उनकी तकदीर में लिखा था। जीवन में न कोई आशा है, न कोई उमंग जैसे उनके जीवन में सोते सूख गए हों, सारी हरियाली मुरझा गई हो।" गोबर गांव में रहकर किसान बनकर कृषि करने की बजाय, शहर में रहकर मजदूरी करने को अधिक उचित समझता है। गोबर के इस कथन के द्वारा होरी की आर्थिक स्थिति और खेती न करने का मंतव्य स्पष्ट हो जाता हैं- "गोबर ने घर पहुंचकर उसकी (घर की) दशा देखी, तो ऐसा निराश हुआ कि इसी वक्त यहां से लौट जाय। घर का एक हिस्सा गिरने-गिरने हो गया था। द्वार पर एक बैल बंधा हुआ था, वह भी नीमजान। धनिया और होरी दोनों फूले न समाये लेकिन गोबर का जी उचाट था। अब इस घर के संभलने की क्या आशा है। वह गुलामी करता है, लेकिन भरपेट खाता तो है। केवल एक ही मालिक का तो नौकर है। यहां तो जिसे देखो, वही रोब जमाता है। गुलामी है, पर सुखी। मेहनत करके अनाज पैदा करो और जो रुपये मिले, वह दूसरों को दे दो। आप बैठे राम-राम करो।"

गोदान कृषक समस्या पर आधारित महाकाव्यात्मक उपन्यास है। यह कृषि संस्कृति का विषमता मूलक उपन्यास है । इस उपन्यास में दिखाया गया है कि भारतीय कृषि संस्कृति भारतीय पूंजीवादी- सामंतवादी की देन है। गोदान में हम देखते हैं कि खेती करने वाला किसान दिनों-दिन गरीब होता जाता है और खेती करवाने वाला दिनों-दिन अमीर होता जाता है। धन के पास धन आता है यह जुमला पूंजीवादी संस्कृति का उसूल है । होरी का सामंतवाद से ज्यादा पूंजीवाद शोषण करता है। उसका कहना सही है कि जमींदार तो एक ही है मगर महाजन तीन-तीन है। इससे हमें यह पता चलता है कि महाजनी सभ्यता गाँवो में उस समय दूर-दूर तक फैल चुकी थी। "गांवों में महाजनी पूंजीवाद प्रचलित था। यह महाजनी शोषण कई प्रकार का था। गांव में जिस किसी के पास चार पैसे हुए, वही महाजन बनने लगा था। सूअर का खून मुंह लग गया था।" किसानों की जमीन छीन जाने पर उनका मजदूर बनना और मजदूरी करते हुए उनकी करुणामय मृत्यु हो जाना पूंजीवादी सभ्यता का ही अभिशाप है। ग्रामीण संस्कृति इस अभिशाप को अपनी गोद में लिए हुए हैं।"इस महाजनी सभ्यता में सारे कामों का गरज महज पैसा होती है। किसी देश पर राज्य किया जाता है, तो इसलिए कि महाजनों, पूंजीपतियों को ज्यादा-से-ज्यादा नफा हो। इस दृष्टि से मानो आज दुनिया में महाजनों का ही राज्य है। मनुष्य-समाज दो भागों में बंट गया है। बड़ा हिस्सा तो मरने और खपने वालों का है, और बहुत ही छोटा हिस्सा उन लोगों का, जो अपनी शक्ति और प्रभाव से बड़े समुदाय को अपने वश में किए हुए है।"

प्रेमचंद जी ग्रामीण लोगों को अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए, ईमानदारी से घरेलू शिल्प को बढ़ावा देने के लिए रायसाहब के मुंह से वे अपने इस विचार को जनता के सामने लाते हैं –"किसानों को यह विडंबनाएं इसलिए सहनी पड़ती हैं कि उनके लिए जीविका के और सभी द्वार बंद हैं। निश्चय ही उनके लिए जीवन-निर्वाह के अन्य साधनों का अवतरण होना चाहिए, नहीं तो उनका पारस्परिक द्वेष और संघर्ष उन्हें हमेशा जमींदारों का गुलाम बनाए रखेगा, चाहे कानून उनकी कितनी ही रक्षा और सहायता क्यों न करे। किंतु यह साधन ऐसे होने चाहिए जो उनके आचार-व्यवहार को भ्रष्ट न करें, उन्हें घर से निर्वासित करके दुर्व्यसनों के जाल में न फँसाएं, उनके आत्माभिमान का सर्वनाश न करें और यह उसी दशा में हो सकता है जब घरेलू शिल्प का प्रचार किया जाए और वह अपने गांव में कुल और बिरादरी की तीव्र दृष्टि के सम्मुख अपना-अपना काम करते रहें।"

कृषि संस्कृति का सबसे बड़ा धन गाय का धन होता है। इनका मानना है कि वह किसान ही क्या जिसके घर में पशुधन ना हो और उसका दूध-घी ना हो। गाय की इच्छा होरी के जीवन की सबसे बड़ी कामना है। जब वह भोले को विवाह करा देने का लालच देकर उधार में ही उसके दरवाजे गाय आती है तो उसके घर के उस गाय का स्वागत नई वधू की तरह स्वागत करते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश कुछ ही दिनों के बाद वह गाय होरी के भाई हीरा की ईर्ष्या की शिकार हो जाती है। हीरा के द्वारा गाय को विष दे दिया जाता है, जिसके कारण वह गाय मर जाती है। जब दरोगा अपराध सिद्ध करने के लिए हीरा के घर की तलाशी लेने के लिए आता है तो होरी यह जानते हुए कि उसकी गाय उसी के भाई ने मारी है वह दरोगा को घर की तलाशी लेने के लिए रोक देता है और दरोगा को पटेश्वरी, झींगुर सिंह से पैसे कर्ज के रूप में लेकर रिश्वत देने का प्रयास करता है क्योंकि उसका मानना है की तलाशी उसके घर की हो चाहे उसके भाई के घर एक ही बात है। वह नहीं चाहता कि उसके भाई की बदनामी हो।

गांव में लोगों में बिरादरी से बाहर निकाल दिए जाने का डर बहुत भी डरावना और अपमानजनक होता है। उन्हें अपनी बिरादरी में बने रहने का मोह होता हैं। यही कारण है कि वे इसके लिए बड़े से बड़ा भुगतान करने के लिए तैयार हो जाते हैं। होरी को गोबर और झुनिया के अंतरजातीय विवाह के कारण उसे बिरादरी का कोप-भाजन बनना पड़ता है।गोबर की गर्भवती झुनिया को शरण देने के कारण वह सो रुपए नगद और तीस मन अनाज का दंड का भुगतान करता है। बिरादरी से पृथक जीवन की वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। ग्रामीण संस्कृति में परंपरागत मूल्यों, अंधविश्वास, खेत और पशुधन का बहुत महत्व है। होरी और उसके बराबर के किसानों के पास तीन-चार बीघे से अधिक खेत नहीं है पर इन खेतों से उनका लगाव केवल उनके भरण पोषण के नहीं बल्कि कृषक होने के सम्मान के कारण है। प्रेमचंद के अनुसार "कृषि प्रधान देश में खेती केवल जीविका का साधन नहीं है, सम्मान की वस्तु भी है। गृहस्थ कहलाना गर्व की बात है। किसान गृहस्थी करता है। मान-प्रतिष्ठा का मोह औरों की भांति उसे घेरे रहता है। वह गृहस्थ रहकर जीना और गृहस्थी ही में मरना भी चाहता है। उसका बाल-बाल कर्ज से बंधा हो, लेकिन द्वार पर दो-चार बैल बांधकर वह अपने को धन्य समझता है। उसे साल में 360 दिन आधे पेट खाकर रहना पड़े, पुआल में घुसकर राते काटनी पड़े, बेबसी से जीना और बेबसी से मरना पड़े, कोई चिंता नहीं, वह गृहस्थ तो है। यह गर्व उसकी सारी दुर्गति की पुरौती कर देता है।"

मर्यादा बोद्ध भी ग्रामीण संस्कृति का ही एक हिस्सा है। यह होरी के मन मस्तिष्क पर छाया हुआ है।अपनी बड़ी बेटी सोना की शादी में ससुराल वालों की ओर से कोई मांग ना होते हुए भी वह दो सौ रुपए का कर्ज लेकर दिखावे के लिए धूमधाम से शादी करता है और खुद कर्जे के नीचे दब जाता हैं। लेकिन यह कर्ज उसे बहुत भारी पड़ता है और बाद में लगान चुकाने के लिए अपनी दूसरी बेटी रूपा को एक अधेड़ उम्र के रामसेवक के हाथ बचने के लिए विवश हो जाता है और इस प्रकार होरी अपनी खोखली मर्यादा को भी बनाए रखने में भी असफल रहता है यह उसकी सबसे बड़ी पराजय व उसके जीवन की सबसे बड़ी घटना है जिसका वर्णन प्रेमचंद जी ने बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। कृषि व ग्रामीण संस्कृति में धर्म और ब्राह्मण का भी बड़ा महत्व है।ब्राह्मणों के हाथों गरीब कृषक का शोषण किया जाता है। पंडित दातादीन का कर्ज वापिस न देने की कोई भी किसान कल्पना नहीं कर सकता हैं। गोबर दातादीन को नाजायज ब्याज देने से इनकार कर देता है लेकिन होरी इसे स्वीकार नहीं कर पाता है। वह कहता है कि ठाकुर और बनिए के पैसे होते तो चिंता की बात नहीं होती लेकिन ब्राह्मण के रुपए के बारे में तो ऐसा सोच भी नहीं सकते यदि उसकी एक पाई भी रह गई तो हड्डी तोड़कर निकलेगी। यही होरी जब धर्म और मर्यादा की अपनी आस्था के कारण मृत्यु का ग्रास बन जाता है तो उस समय भी यह पंडित दातादीन उसके गोदान के नाम पर होरी के घर की जमा-पूंजी बीस आने पैसे लेने से नहीं चुकता।

2. निष्कर्ष:-

होरी की पूरी कहानी उसके दिनों-दिन गरीब और असहाय होने की कहानी है। उसके जीवन की एक ही प्रबल इच्छा है, एक गाय लेने की। वह इस इच्छा की पूर्ति के प्रयास में पूरे जीवन संघर्ष करता है पर वह सफल नहीं होता। उसकी यह इच्छा उसे किसान से मजदूर में बदल देती है और अंत में इस इच्छा को मन में लिए वह मृत्यु का ग्रास बन जाता है। प्रेमचंद किसानों के शोषण के मूल में उनकी अशिक्षा, अंधविश्वास, सामंती मूल्य व पूंजीवादी व्यवस्था और एकता का अभाव देखते हैं। ग्रामीण क्षेत्र की कहानी किसानों से अलग नहीं हो सकती इसलिए गोदान की शुरुआत होरी के दैनिक जीवन की क्रियाओं से होती है, धीरे-धीरे होरी ग्रामीण जीवन के संकट में फँसता चला जाता है। अंत में मृत्यु ही उसे संकट से कर आज़ाद कर पाती है। उपन्यास का अंत होरी की मृत्यु और धनिया का पछाड़ खाकर नीचे गिरने से होता हैं। आरंभ से अंत तक उपन्यास होरी के इर्द-गिर्द चक्कर लगाता है। पूरे उपन्यास में होरी व धनिया का जीवन परिश्रम व मेहनत के बावजूद दुख-दर्द से भरा हुआ है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गोदान भारतीय ग्रामीण संस्कृति में विकसित होते हुए होरी व धनिया जैसे किसानों की करुण गाथा हैं।

संदर्भ ग्रन्थ:-

1. प्रेमचंद, गोदान, रजत,प्रकाशन, मेरठ, संस्करण : 1995
2. झारी, डॉ. कृष्णदेव, उपन्यासकार प्रेमचंद और उनका गोदान, प्रथम संस्करण : 1965, भारतेंदु भवन, चंडीगढ़
3. प्रेमचंद, महाजनी सभ्याता, संपादक – मिश्र, सत्यप्रकाश, प्रेमचंद के श्रेष्ठ निबंध, संस्करण : 2003, ज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद,
4. प्रेमचंद, प्रेमाश्रम, अनुपम प्रकाशन, पटना, संस्करण : 2008
5. प्रेमचंद, कर्मभूमि, डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली